चतुर्थ अध्याय

समकालीन राष्ट्रीय परिवेश और वेदना की अनुभूति

बींसवीं शताब्दी के आरंभ के साथ ही भारत में नवीन चेतना की शक्तियाँ प्रबल हो रही थी। यह राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रखरता का समय था। दक्षिण अप्रीका से लौटने के बाद गाँधी जी कांग्रेस में शामिल हुए और सत्य तथा अहिंसा के द्वारा स्वराज्य प्राप्ति पर बल दिया । अपने आरंभिक दौर में उन्हें अपने आंदोंलनों में सफलता भी मिली। काहिरा का किसान आंन्दोलन सफल रहा। इसके बाद तो गाँदी जी से लोग इतने प्रभावित हुए कि उनके भक्त बन गए और उनके आंन्दोलनों में जनता सक्रिय भागीदारी करने लगी। जब सन् 1919 में गाँधी जी ने सत्याग्र करने का संकल्प किया तो समुचे देश पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। पंजाब में सत्याग्रह का सूत्रपात हुआ, हिंसात्मक घटनाएँ हुई, अंग्रेजों ने आन्दोलन को कुचलने के लिए कोई अत्याचार बाकी न रखा। 13 अप्रेल को जलियाँवाले बाग का भीषण नरसंहार हुआ। गाँधी जी खिलाफत आंन्दोलन में शामिलल हो गए किन्तु देश का हिंसात्मक परिवेश उन्हें राश न आया और उन्होंने इसे हिमालय जैसी बड़ी भूल कहकर आंन्दोलन को स्थगित कर दिया।

देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में कांग्रेस के अतिरिक्त और भी दलों और व्यक्तियों ने योगदान किया। किसान आंन्दोलन, मजदुर आंन्दोलन, सुभाष चन्द्र बोस का आजाद हिन्द फौज किसी भी संगठन का कम योगदान नहीं। गाँधी जी के आचार विचार का जो प्रभाव देश की संस्कृति, नवजागरण आदि पर पड़ा उसकी मिसाल ढ़ुढ़े नहीं मिल सकती। गाँधी जी केवल राजनीतिक नेता ही न थे, बल्कि इस देश की जनता की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति थे।

गाँधी धार्मिक और अध्यात्मिक दृष्टि से भी सम्पन्न थे। उनके जीवन में श्री रामचरित मानस तथा गीता ने प्रेरणा प्रदान की थी। इस्लाम पर भी उनकी आस्था थी।

कांग्रेस की स्थापना के पूर्व ही भारतवर्ष में नवजागरण की लहर व्याप्त थी। इस नवजागरण के केन्द्र में स्वत्व निज भारत है था। इसके पीछे धार्मिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक तत्व भी क्रियाशील थे। सबसे पहले भारतेन्दु और उनके बाद छायावाद तक के कवियों में इन तत्वों की झलक देखी जा सकती है। इन सभी कवियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से एक ही उद्देश्य था स्वत्व निज भारत। आचार्य शुक्ल ने कहा भरतेन्दु के साहित्य में देशभक्ति का स्वर सबसे उँचा है। उनकी राजनीति प्रेरित पहली रचना सम्भवतः श्री राजकुमार शुभागमन-वर्णन है। जो सन् 1876 में बाला बोधिनी में प्रकाशित हुई थी। इस कविता में अतीत के शौर्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है -

'दुष्ट नृपति बल दल दली दीना भारत-भूमि।
लहिहै आज अनन्त अति शुच-पद-पंकज-चूमि।
साँचहु भारत में बढ़यो, अचरज सहित अनन्द ,
निरखत पश्चिम में उदित आजु अपूरब चन्द।
जैसे आतप तपित को छाया अति सुहात,
जवन राज को अन्त सुच आगम तिमि बरसात।'[1]

इस राजनीतिक उत्तेजना में साहित्य की गतिविधी भी बदल रही थी। बंगाल में बंकिम क्रांति गीत गा रहे थे और रवीन्द्रनाथ भी प्रकाश में आ गये थे। उनमें एक साथ भारतीय परम्परा, संस्कृति, राष्ट्रीयता और मानवीयता का संगम था। आर्यसमाज और रामकृष्ण भारतीय दर्शन और अतीत के गौरव की बात कर रहे थे। ऐसे समय में निराला ने साहित्य में प्रवेश किया और उनके अपने जीवन में भी वेदना प्रयाप्त था साथ ही समाज और राष्ट्र भी विदेशी शासन की वेदना से त्रस्त था। स्पष्ट ही था कि कवि के काव्य में वेदना की अभिव्यक्ति होनी ही थी और प्रयाप्त मात्रा में हुई भी है।

गाँधी जी के दक्षिण भारत से लौटने पर कांग्रेस की क्रिया-कलापों में नया मोड़ आया। सत्याग्रह आन्दोंलन, स्वदेशी के प्रचार, छुआ छुत का विरोध, दिन्दु मुसलमानों की एकता पर बल देकर महात्मा गाँधी ने देश के युवा वर्ग के साथ-साथ किसानों, मजदूरों में नई उर्जा भर दी। निराला की विचार धारा में इन आन्दोलनों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। निराला क्रांतिकारी आन्दोंलनों से भी कम प्रभावित नही हुए थे, बल्कि इसका प्रभाव कुछ ज्यादा ही था, इसका कारण था उनका खुद का उग्र स्वभाव। निराला के मानस पर बंगाल की धरती का प्रभाव देखा जा सकता है। अलग-अलग जगह के अलग-अलग गुण होते हैं और चूंकि कलकत्ता में बामपंथियों का प्रभाव था इस कारण उनके काव्य में इसकी अनुगूँज सुनाई पड़ती है। बैसवाड़े का पौरुष, गरीबी, निरक्षरता ने उनके मानस को उद्विग्न किया और साथ ही कलकत्ते की क्रांतिकारिता ने उन्हें समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। इसी कारण निराला की कविताओं का गाँधीवादी प्रभाव से मुक्त होना अस्वाभाविक न था, लेकिन गाँधी जी के प्रति उनके मन में अटूट श्रद्धा और विश्वास था। 'सुधा' की टिप्पणियों में गाँधी जी के क्रिया-कलापों और उनके आन्दोलनों, नीतियों का जबरदस्त समर्थन किया गया। गाँधी जी के लिए उनका कहना है - 'महात्मा गाँधी संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष हैं।'2

निराला जनता और सरकार पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं - 'यह अंग्रेज सरकार की चूसने की नीति के विरोध में तुली हुई ऐसी मार है, जिसके सामने किसी भी प्रकार की बुद्धि अपना इन्द्रजाल नहीं फैला सकती। उस रोज तक हम उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों को हम यही कहते हुए सुनते थे कि जिस चालाकी का अस्त्र सरकार हमारे शासन में छोड़ती है, हमें भी सरकार से उसी रीति से पेश आना चाहिए। देशबंधु दास ने स्वराज दल का संगठन इसी अभिप्राय से किया था। बल्कि कहना चाहिए महात्मा जी से पहले अँग्रेजी राज्य में भारत की राजनीति का इतिहास बिलकुल दूसरी तरह का था, जो जनता से बहुत दूर था। महात्मा जी जनता के प्राणों तक पहुँच गये हैं, वे कूटनीति को मानवीव धर्म से दूर समझकर उसके प्रति सविनय अवज्ञा दिखलाने की शिक्षा देते हैं। इस अस्त्र

को साधारण जनता अनायास ग्राहण कर सकती है और यह अवज्ञा सरकार की तमाम कूटनीतियों के लिए अकेली यथेष्ट है। यह सर्वकालिक असंतोष की आग सरकार के प्रतिकूल जनता के हृदय को जला सकती है, जिसकी गरमी और ज्वाला तोप और बंदुकों की ज्वाला से बहुत अधिक है, यह कभी निष्फल नहीं हो सकती। कारण, यह प्राण संचारिणी है, कूटनीति के पूर्व नाश का प्रयोग। ऐसी जनता से सरकार रक्षक के ही रुप से मिल सकती है, शासक के रुप से नहीं।'3

इस उद्धरण में गाँधी जी की राजनीति को पहले की राजनीति से भिन्न कहा गया है। स्वराज्य पार्टी विधानसभा के लिए चुनाव की पक्षपाती थी, गाँधी जी और उनके अनुयायी इसे पक्ष में न थे। निराला गाँधी जी की जनता के प्राणों तक पहुँचने वाले सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन करते हैं। गाँधी जी के उपवास पर निराला इतने व्यग्र होते हैं कि उनमें क्षोभ और पीड़ा भर जाती है - 'अब इस उपवास की मूर्ति में केवल महात्माजी हैं, जो सत्याग्रह के बल पर विश्व पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, जो अमर जीवन के ज्ञाता, सदा मुक्त, सदा स्वतंत्र हैं। जिस मंत्र को लेकर वह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अवतीर्ण हुए थे, अब उसी की सिद्धि में उतीर्ण हो रहे है। यह जीवन साधारण समझ में नहीं आता। यह समझ से बाहर की बात है। थोड़ी देर के लिए, शरीर प्रेम के कारण, हम रो सकते हैं, उनके अदर्शन से कलम रुक जाता है, हमें क्षोभ हो सकता है, पर उनका महामन्त्र यदि उनकी इच्छा के अनुसार शरीर-दान की सिद्धि प्राप्त कर गया तो, उनके मृत्य-जीवन को प्राप्त कर देश कितना अग्रसर होगा, इसका अनुमान भी नहीं किया जा सकता। हम भिरु हैं, साधारण कोटि के मनुष्य हैं, हम महात्माजी को सशरीर, सप्राण देखने के लिए ही इश्वर से बारम्बार करबद्ध साधु प्रार्थना करते हैं।'4

(क) *देश की पराधीनता और तज्जन्य वेदना।*

निराला की अधिकांश रचनाओं में राजनीति की प्रच्छन्न या प्रत्यक्ष स्थितियों का

चित्रण हुआ है। यहाँ कवि अंग्रेजों के शोषण और लूट से व्यथित दिखाई देता है। पराधिनता अपने आप में एक पीड़ा है और उससे मुक्त होना सुख। इसी के कारण कवि मुक्ति की बात करता है। 'बंधन चाहे जिस प्रकार का हो वह निराला जैसे स्वच्छन्दतावादी कवि को प्रीतिकर नहीं लग सकता था, किन्तु बंधनों को तोड़ने का मतलब अराजकता नहीं है। बंधनों को तोड़ने में बेहतर समाज और बेहतर व्यक्तित्व के निर्माण की भावना निहित है।'5 कलिकाल में चारों ओर झूठ, फरेब, अन्याय, अत्याचार, अज्ञान, हिंसा आदि का बोलबाला है। पराधीन भारत में ये अनिष्टकारी शक्तियाँ और भी प्रबल हो गई हैं इसलिए कवि कलिकाल के इन बंधनों को तोड़ने की बात करता है -

"टूटे सकल बंध
कलि के, दिशा-ज्ञान-गत हो गहे बन्ध।
रुद्ध जो धार रे
शिखर-निर्झर झरे,
मधुर कलरव भरे
शून्य शत-शत रन्ध्र।'6

निराला की कविताओं में नवजागण की जो कल्पना की गई है वह उपनिषदों, रामायण, महाभारत, गीता आदि के आधार पर। भारतीय नवजागरण पश्चिमी विचारों के आधार पर स्थाई रुप से खड़ा नहीं हो सकता। निराला ने पश्चिमीकरण की प्रक्रिया का जोरदार विरोध किया है -

"योग्य जन जीता है
पश्चिम की उक्ति नहीं-
गीता है, गीता है
स्मरण करो बार-बार।'7

इसी कविता की आगे की पंक्तियों को ध्यान से देखने पर तत्कालीन परिवेश के स्वतंन्त्रता संग्राम और उसके क्रूर दमन का स्पष्ट संकेत दिखाई पड़ता है दृष्टव्य है -

"पशु नहीं, वीर तुम,
समर-शूर क्रूर नहीं,
काल-चक्र में हो दबे
आज तुम राजकुँवर - समर सरताज।'8

खण्डरह के प्रति कविता में कवि खण्डहर के बहाने एक प्रकार का संदेश भी देता है जो हमें विस्मृति से जगाता है। अतीत काम्य नहीं किन्तु उसमें ऐसा कुछ अवश्य होता है जो हमारे जीवन को उर्जावान बनाता है। महाराज शिवाजी का पत्र कविता में इस देश की एकता और विदेशी साम्राज्यवाद के विरोध की ध्वनि है। शिवाजी भातीय गौरव और वीरता के प्रतीक थे। पत्र में स्पष्ट लिखा गया है यदि कुछ लोग एकता के सूत्र में बद्ध होकर औंरंगजेब जैसै अत्याचारी सम्राट का विरोध करे तो उसे उखाड़कर फेक सकते हैं -

"उठती जब नग्न तलवार है स्वतन्त्रता की,
कितने ही भावों से,
याद दिला घोर दुख दारुन परतन्त्रता का,
फूकती स्वतन्त्रता निज मन्त्र से
जब व्याकुल कान
कौन वह सुमेरु
रेणु-रेणु जो न जो जाय
इसलिए दुर्जय है हमारी शक्ति।'9

स्वतन्त्रता की भावना को तीव्र बनाने के लिए कवि परतन्त्रता के दारुण दुखों

को याद करता है और कविता में उसका समावेश कर लेता है। इसी के कारण शिवाजी औरंगजेब जैसे शक्तिशाली सम्राट के छक्के छुड़ाने में समर्थ होते हैं। इस कथानक के माध्यम से निराला अपने समय के साम्राज्य विरोधी आन्दोंलन की ओर इशारा कर रहे थे। औरंगजेब कई स्थानों पर मात खा चुका था, अंत में दक्षिण के युद्ध में मिर्जा राजा जयसिंह को भेजना पड़ा। शिवाजी के पत्र में कहा गया कि यह तो भाई-भाई की लड़ाई है जो नहीं होनी चाहिए। इस संदर्भ में बिहारी का एक दोहा इस बात की पूष्टि करता है-

"स्वारथ न सुकृत श्रम बृथा देख विहंग बिचारि।
बाज पराए पाणी परि तु पंक्षी न मारि।।"

अंग्रेज भी अपने समय में इसी नीति से शासन करना चाहते थे। उनका मन्त्र था फूट डालो शासन करो। बीच-बीच में शिवाजी राजा जयसिंह पर व्यंग करने से भी नहीं चुकते-

"पास ही तो देखो,
क्या कहता चितौड़-गढ़?
मढ़ गये ऐसे तुम तुर्कों मे?
करते अभिमान भी किन पर?
विदेशियों विधर्मियों पर?
काफिर तो कहते न होंगें कभी तुम्हें वे?
विजित भी न होंगे तुम ओ गुलाम भी नहीं?!
कैसा परिणाम यह सेवा का!
लोभ भी न होगा तुम्हें मेवा का महाराज!'10

कवि निराला राजा जयसिंह के बहाने देश के पुरुषार्थ को जगाने का प्रयत्न कर रहे हैं -

"यदि कुछ पुरुषत्व है -
तत्त्व है,
तथा तलवार
सन्ताप से निज जन्म भूमि के
दुखियों के आँसुओं से
उस पर तुम पानी दो।'11

इस कविता के सम्बन्ध में दूधनाथ सिंह ने विस्तार से विवेचन किया है और व् लिखते हैं- 'यदि निराला के आत्मसाक्षात्कार के त्रणों को छोड़ दिया जाय तो यह राजनीतिक दाँवपेंच की कविता मालूम पड़ती है।'12 कविता को आदि से अन्त तक एक श्रृंखला के रुप में देखना चाहिए तभी इसकी अर्थवत्ता की वास्तविक पहचान होगी। निराला का राजनीतिक दाँवपेंच की इस कविता को शिवाजी के समकालीन संदर्भ और निराला के अपने समय के राष्ट्रीय आन्दोंलन के परिपेक्ष्य में देखना ही युक्तिसंगत है।

(ख) राष्ट्रीय गौरव की भावना

आधुनिक काल जागरण काल ही है। और निराला देश के नये जागरण के लिए आरंभ से ही सतर्क थे। सन् 1927 में उनका लिखा आलोचनात्मक ग्रन्थ रवीन्द्र कविता-कानन से इसकी पुष्टि हो जाती है। निराला के जागरण और कविताओं की विशेषता यह है कि वे सामान्यतः जनोन्मुख हैं। जागो फिर एक बार उनका प्रतिनिधि जागरण गीत है। कविता की पहली ही पंक्ति यह संकेत करती है कि एक बार फिर दागो अर्थात यह जागना पहली बार नही है इसके पहले हम जगे हुए थे। हमारा अतीत गौरवशाली था फिर किसी कारण आज हम सोये हुए हैं और हमारा जागना इस पराधीनता से पार पाना है। अतीत के गौरव का स्मरण करते हुए कवि अपने अतीत से प्रेरणा लेने का आह्वान देशवाशियों से करता है। कवि गुरु गोविन्द सिंह की वीरता को वीर-जन-मोहन

अति दुर्जय संग्राम-राग कहता है। सवा-सवा लाख पर एक को चढ़ाउँगा कहककर वह अपनी जातीय वीरता को अत्यन्त प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुत करता है। यह प्रभाव तब और बड़ जाता है जब वह लिखता है शेरों की माँद में आया है आज स्यार। शेर और स्यार के पशु प्रतिकों से कवि भारतीय अतीत के गौरवशाली पक्ष को उजागर करता है।

'आपकी राष्ट्रीय चेतना अत्यंत जागरुक थी जो कई स्वरुपों में समाज के सम्मुख आयी है।इसी चेतना से ओत-प्रोत कवि ने देश के स्वर्णिम अतीत की गौरवगाथा के गीत गुंजित किए, सुप्त राष्ट्र के जागरण हेतु जागरण गीतों के माध्यम से शंखनाद किया किया, न्म्न एवं भ्रष्ट राजनायकों की राजनीति की सड़ान्ध भरी समाजिक एवं धार्मिक व्यवस्थाओं को उंगली दिखाई। सर्वहारा वर्ग के प्रति मानवीय भावना को प्रवाहित किया। अंध विस्वास एवं सड़ी-गली पुरातन्ता की समाप्ति हेतु विगुल बजाया, समाज की नवीन रचना एवं वैभव सम्पन्न जीवन की मनोहारी परिकल्पना की। यह तत्व निराला जी की राष्ट्रीय चेतना के बहुमूखी रुप है। निराला की राष्ट्रीयता, अध्यात्मिक चिन्तन स्वयं स्वामी विवेकानन्द जैसे सन्तों के प्रभाव से मिल कर बनी है। कुछ लोगों के विचार से निराला के अधिकांश कविताएं राष्ट्रीयता की अधारभूमि पर ही लिखी गई है। उनकी राष्ट्रीयता दलीय राजनीति, अनुबन्धित बिचारधारा, वादग्रस्तता. राष्ट्रीय संस्कृति, मात्र भौगोलिक सीमाओं के अन्तरगत ही नही थी बल्कि सम्पुर्ण तक वह नवजागृति का संदेश प्रचारित कर रही थी। निराला की राष्ट्रीया पुष्पित एवं पल्लवित होकर सम्पुर्ण प्राणी मात्र को मानवीय भावना में समेटती है और यही मानववादी राष्ट्रीयता निराला की राष्ट्रीय कविता को आधारभूमि बहुरंगी एवं विस्तृत आयाम प्रदान करती है।फैलैव के साथ ही उसमें गहराई एवं गंभीरता भी है। जिसके कारण उससे अंकुरित विचार प्राणवान एवं तेजवान है।'13 निराला की कविताओं में भारत के स्वर्णिम अतीत का वर्णन है, दिल्ली, यमुना के प्रति, भारती, जय विजय करे आदि कविताओं में राष्ट्रीय गौरव का स्पष्ट चित्र परिलक्षित होता है -

"लंका पदतल-शतदल, गर्जितोर्भि सागर जल,
धोता शुचि चरण-युगल, स्तव कर बहु अर्थ भरे।

मुकुट शुब्र हिम-तुषार, प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएं उदार, शतमुख-शतस्र मुखरे।
भारति, जय विजय करे, कनक-राज्य-कमलधरे।'14

दिल्ली नामक कविता में भारत का अतीत कवि की आँखों में है तो वर्तमान की दुर्व्यवस्था भी कवि की आँखों के सामने ही ताण्डव कर रही है। निराला के लिए भारत सर्वोपरि है। दिल्ली कविता में उनका यह प्रश्न यथोचित ही है -

"क्या यह वही देश है
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में
उज्जवल, अधीर और चिरनबीन
श्रीमुख से कृष्ण के सुना था जहाँ भारत ने
गीत-गीत-शंखनाद -
मर्मवाणी जीवन-संग्राम की
सार्थक समन्वय ज्ञान-कर्म-भक्ति योग का।'15

निराला देश के महान सपुतों, एवं आदर्श चरित्रों के माध्यम से देश की जनता को प्रेरित करने का प्रयत्न करते हैं। निराला की दृष्टि अतीत एवं वर्तमान दोंनो पर केन्द्रित थी। निराला ने देखा कि भारत की अधिकांश जनता मेहनतकश है किन्तु किसान और मजदुरों का यह देश इन्हीं को भूल रहा है, श्रमजीवी वर्ग प्रताड़ित हो रहा है, उनका शोषण किया जा रहा है। कवि का मत था कि बिना श्रमजीवी वर्ग के उत्थान के राष्ट्र का उत्थान सम्भव नहीं है। निराला ने यह समझा कि देश की स्वाधीनता के लिए राजनायकों की अपेक्षा किसान अच्छी और प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए निराला ने इन

वर्गों के प्रति करुणामयी उद्‌गार प्रकट किए। भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर, विधवा जैसी रचनाओं में इनके प्रति निराला की करुणा स्पष्ट देखी जा सकती है। डॉ. भगीरथ मिश्र के शब्दों में - 'निराला की राष्ट्रीयता देशप्रेम के व्यापक भाव से संशक्ति तो है ही, उसमें मानवता के प्रति प्रेम की भावना भी भरी हुई है। उनकी राष्ट्रीयता एवं अविकसित राष्ट्र और उसके दलित दुखी औ पीड़ित निवासियों के प्रति सहानुभूति तथा उनके जीवन के नव निर्माण से सम्बद्ध है।'16

मुख्यतः मानवतावाद पर ही निराला की राष्ट्रीयता अवलम्बित है। जिसके चिंतन में क्षेत्र, राष्ट्र एवं देशवासियों तक ही सीमित नहीं है बल्कि समता और सम्पन्नता का रुप उसमें प्राप्त होता है -

"सारी सम्पति देश की हो
सारी आपत्ति देश की बने
जनता जातीय वेश की हो
वाद से विवाद यह ठेन
कांटा कांटे से कढ़ओ।'17

और -

'नहीं आज का हिन्दू, आज का मुसलमान
आज का इसाई सिक्ख, आज का यह मनोभाव
आज की यह रुप रेखा, नहीं एक कल्पना
सत्य है मनुष्य, मनुष्य के लिए,
बन्द है जो दल अभी किरण सम्पात से
खुल गये वे सभी।'18

निराला ने राष्ट्रीय गौरव के लिए ऐतिहासिक पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाया है। शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, तुलसीदास, राम, रैदास जैसे महापुरुषों पर कविताएं मात्र उन्हें श्रद्धांजली देने के लिए नहीं बल्कि इन कविताओं के माध्यम से पराधीम भारत को जगाने का महत्त प्रयत्न हुआ है। डॉ भगीरथ मिश्र के शब्दों में - 'निराला की राष्ट्रीयता भारत की इस मिट्टी में उगती, पनपती है, परंतु इसमें प्रफुल्लित एवं पल्लवित होती हुई बहुत दूर जाकर वह समस्त मानवता में अपने को समेट लेती है। इसलिए उनकी राष्ट्रीय कविता का धरातल बड़ा विस्तृत और बहुरंगी है।'19

भारतीयों को जगाने के लिए उनमें उर्जा भरना जरुरी था, निराला जागो फिर एक बार कविता में भारतवासियों में इसी उर्जा का संचार करने का प्रयत्न करते हैं -

"जागो फिर एक बार
समर में अमर कर प्राण,
गान गाए महासिन्धु से
सिन्धु-नद-तीरवासी
सैन्धव-तुरंगों पर
चतुरंग चमू संग
सवा-सवा लाख पर
एक को चढ़ाउँगा,
गोविन्द सिं निज,
नाम जब कहाउँगा।"

****

"शेरों की माँद में
आया है आज स्यार-
जागो फिर एक बार।'20

निराला को भारतीय शौर्य का ज्ञान है तभी तो वे भारतीयों को उनकी प्रकृति और शौर्य का स्मरण करा रहे है. -

"हैं जो बहादुर समर के
वे मर के भी
माता को बचायेंगे।
शत्रुओं के खुन से
धो सके यदि एक भी तुम माँ के दाग,
कितना अनुराग देशवासियों का पाओगे।'21

राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति पर लिखी निराला की कविता अपनेआप में अतुलनीय और हिन्दी साहित्य में अप्रतिम है -

"भारति, जय, विजय करे!
कनक शस्य कमल धरे!
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल,
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे।'22

निराला की राष्ट्रीय भावना के प्रति प्रेम आरंभ से ही था। उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुवात ही मातृभूमि की वंदना से की है यह उनके हृदयस्थ राष्ट्रप्रेम का ही परिचायक है -

"शोभामय शांतिनिलय पाप ताप हारी,
मुक्त बन्ध, घनान्द मुदमंगलकारी।
वधिर विश्व चकित भीत सुन भैरव वाणी।
जन्मभूमि मेरी है जगन्महारानी।'23

निराला की काव्य रचना का समय ही स्वाधीनता आन्दोंलन का समय था, और ऐसे में राष्ट्रीय भावना का प्रादुर्भाव किसी भी सहृदय व्यक्ति के हृदय में उदित होना अति स्वाभाविक है। पूरा देश इस आन्दोंलन में सक्रिय हो गया था फिर निराला कैसे वंचित रह सकते थे, वे अपनी कविताओं के माध्यम से देशवासियों के मन में देशप्रेम को जगाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। निराला ने देखा की लोगों के मन में देश प्रेम की प्रयाप्त भावना का अभाव है और उनमें अंग्रेजी शासन का भय व्याप्त है। देश की इसी कायरता के खिलाफ निराला शंखनाद करते हैं -

"शेरों की माँद में
आया है आज स्यार -
जागो फिर एक बार।"

इसी कविता में कवि आगे कहता है -

"योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है, गीता है -
स्मरण करो बार-बार,
जागो फिर एक बार।'24

निराला निद्रा में डुबे देशवासियों को सिर्फ जगाने का ही प्रयत्न नहीं करते बल्कि वे स्वंय अपने जीवन की सार्थकता मातृभूमि की रक्षा हेतु समर्पण करने में मानते हैं। सलाह देना आसान है ऐसा माना जाता है किन्तु निराला सामने से नेतृत्व करते हैं और अपने जीवन को मातृभूमि पर न्योछावर करने की बात निम्न कविता में करते हैं -

"नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हो तेरे चरणों पर, माँ,
मेरे श्रम संचित सब फल ।'25

आगे वे फिर कहते हैं -

"क्लेदयुक्त अपना तन दूँगा,
मुक्त करुँगा तुझे अटल,
तेरे चरणों पर देकर बलि
सकल श्रेय-श्रम संचित फल।'26

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए निराला अतीत के गौरव का गुनगाण करते हुए ऐतिहासिकता का उल्लेख करते हैं -

"छेड़ रहा इतिहास हमारा यही हृदय तंत्री-तान।
स्वतंत्रता पर इस भारत ने किए निछावर अपने प्राण।।'27

वर्तमान की दुखद स्थितियों से व्यथित कवि को इतिहास के गौरवशाली क्षण और परिस्थितियाँ स्वतः आकर्षित करती हैं। वे बार-बार इतिहास के गौरवशाली क्षणों का चित्रण करते हुये जनता से पुछते हैं कि यदि यह वही देश है तो आज पराधीन क्यों है? निराला ऐतिहासिक मूल्यों को नये संदर्भ में नये ढ़ंग से देखने की प्रेरणा देते हैं। निराला ने जनता को जागृत करने के लिए इतिहास का सार्थक प्रयोग किया है।

(ग) रहस्यानुभूति

छायावाद के सम्बन्ध में सबसे भ्रांतिपूर्ण धारणा यह रही कि अधिकांश विद्वान छायावाद और रहस्यवाद में कोई निश्चित विभाजन रेखा नहीं खींच पाये। आचार्य रामचन्द्र

शुक्ल ने कहा - "छायावाद का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम का अनेक प्रकार से चित्रण करता है। सच तो यह है कि रहस्यवाद छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति है। प्रकृति के विभिन्न अनवरत परिवर्तनशील रुपों के प्रति जब कवि के मन मस्तिष्क में अनेक प्रकार के प्रश्न उठने लगते हैं तब वह रहस्यवाद के क्षेत्र में पदार्पण करता है। रहस्यवाद में रागात्मकता होती है, परमात्मा और आत्मा के प्रेम विरह का चित्रण होता है। निराला अद्वैतवादी दार्शनिक और रहस्यवादी भी हैं। उन्होंने अपनी रहस्यवादी कविताओं में आत्मा और परमात्मा के प्रेम और विरह सम्बन्धों को सूक्ष्ता से अभिव्यक्त किया है।

रहस्यवाद का आधार जिज्ञासा, विरह एवं कल्पित मिलन की ब्रम्ह सम्बन्धित भावनाओं से निर्मित होता है। निराला ने अपनी रहस्यवादी कविताओं में आत्मा और परमात्मा के प्रेम सम्बन्धों को प्रकृति के माध्यम से अति सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। उनकी रहस्यभावना पारंम्परिक नहीं है वे नये और निराले रुप में इस क्षेत्र में आते हैं। इस सम्बन्ध में श्री तेजनारायण सिंह लिखते हैं - "निराला के काव्य का मेरुदण्ड रहस्यवाद है, किन्तु निराला के रहस्यवाद में न तो मध्ययुगीन सन्तों की कुहेलिका है, न महादेवी का द्वैतवादी दुःखदर्शन। इस रहस्यवाद में निर्गुण सन्तों की साधना और सगुण भक्तों के प्रेम का समन्वय है। वे कहीं भी अपने प्रणय निवेदन में स्त्रैणता की हद तक नहीं पहुँचे हैं उनमें रसता है,रसात्मकता है पर पौरुष की अनुगुँज भी है। उनके विरह में भी मिलन का अलक्ष्य भाव है क्योंकि इस रहस्यवाद का आधार द्वैत नहीं अद्वैत है, अज्ञान नहीं वेदांती ज्ञानवाद है।"28

निराला आत्मा के परमात्मा का ही अंश मानते हैं। उनका रहस्यवाद आध्यात्मिक भी है और मानवीय भी। निराला मे आत्मा और परमात्मा दोनों को एक दार्शनिक की भाँति सोचा है और कवि की भाँति उनका निरुपण किया है। परिमल, गीतिका, आराधना आदि

कुछ उनके ऐसे काव्य संग्रह हैं जिनमें उनकी आध्यात्मिक रहस्य भावना दार्शनिक गूढ़ चिंतन के रुप में अभिव्यक्त हुई है। जीव और परमात्मा के बीच तात्विक एकता की अभिव्यक्ति करती हुई उनकी प्रसिद्ध कविता तुम और मैं में वे कहता है -

"तुम प्राण और मैं काया
तुम शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रम्ह
मैं मनोमोहिनी माया।"29

यहाँ कवि ने आत्मा-परमात्मा को प्रकृति-पुरुष के रुप में व्यक्त किया है। अन्य कवियों ने स्त्री पुरुष के रुप में व्यक्त करते हैं। इसका मतलब यह नही कि निराला नारी रुप को स्वीकार नही करते। उनके काव्य में नारी सौन्दर्य का जो चित्रण हम देखते हैं उसमें एक प्रकार की अलौकिकता है। निराला की यह विशिष्टता है कि मानव के अन्तरंग शौन्दर्य का चित्रण करते हुए भी उसमें रहस्य भावना का संचार करने में सफल हुए हैं। उनकी प्रेम भावना से पूर्ण कविताओं में जो रहस्य भावना का उद्‌घाटन हुआ है वह अद्वितीय है। दृष्टव्य है -

"बैठ ले कुछ देर,
आओ एक पथ के पथिक-से
प्रिय अंत और अनन्त के,
तम गहन जीवन घेर।"

****

"सरल अति स्वच्छंद
जीवन, पात के लघुपात से,
उत्थान-पतनाघात से
रह जाय चुप, निव्दंन्द।"30

यहाँ प्रिय का अर्थ प्रेयसी के रुप में ग्हण किया जाता है जबकि कविता भक्ति परक होने के कारण प्रिय का अर्थ ह्रदय स्थित परमात्मा हो सकता है। यहाँ आत्मा और परमात्मा के मिलन का जिक्र हुआ है। यह कुछ वैसा ही है जैसे कबीर के प्रिय राम है। विरह की दशा में साधक की अवस्था का चित्रण करते हुए निराला कहते हैं -

"तप वियोग की चिर ज्वाला से
कितना उज्ज्वल हुआ ह्रदय यह,
पिष्ट कठिन साधना शिला से
कितना पावन हुआ प्रणय यह,
मौन दृष्टि सब कहती हाल।'31

प्रियतम(परमात्मा) की राह देखती प्रिया(आत्मा) की विरह दशा का कवि कुछ इस तरह वर्णन करते हैं -

"कब से मैं पथ देख रही प्रिय,
उर न तुम्हारे रेख रही प्रिय
तोड़ दिये जब सब अवगुण्ठन,
रहा एक केवल सुख - लुण्ठन,
तब क्यों इतना विस्मय कुण्ठन
असमय समय न करो खड़ी प्रिय।'32

कबीर भी अपने प्रिय को पाने के लिए स्वंय को जला देना चाहते है -

"यह तन जारौ मसि करौ, ज्यों धुआँ जाई सरग्गि।
मतिव्यै राम दया करे बरसि बुझावै अग्गि।।"

कबीर की तरह निराला के यहाँ भी विरह दग्ध आत्मा, परमात्मा की राह देख रही है, मिलन की अति उत्कणठा भी है। निराला प्रति परक प्रतीकों के माध्यम से रहस्यवाद की प्रतिष्ठा करते हैं -

"किस अनन्त का नीला अंचल हिला-हिला कर
आती हो तु सजी मण्डलाकार
एक रागिनी में अपना स्वर मिला-मिलाकर
गाती हो ये कैसे गीत उदार
सोह रहा है हरा क्षीण कटि में, अम्बर शैवाल,
गाती आप, आप देती, सुकुमार करों में ताल।'33

यहाँ निराला के मन में प्रकृति के रहस्य के प्रति जिज्ञासा के भाव उत्पन्न हुआ है। उनकी बहुत सारी कविताओं में हमें यह भाव देखने को मिलता है। इसी सम्बन्ध में एक विचार उल्लेखनीय है - 'निराला के रहस्यवाद की कई कोटियाँ हो सकती है, जैसे प्रकृति परक रहस्यवाद, योगपरक रहस्यवाद, सौन्दर्य परक रहस्यवाद, और भक्तिपरक रहस्यवाद।'34 विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित निराला रहस्यवाद में विरह की अपेक्षा मिलनवस्था को अधिक महत्व देते हैं यह अद्वैतवाद का ही प्रभाव है-

"मिल गये एक प्रणय में प्राण
मौन, प्रिय , मेरा मधुमय गान।'35

निराला रहस्यवादी कवि होने के वावजुद पलायनवादी नहीं बल्कि परिस्थिति से संघर्ष करने वाले महान रहस्यवादी कवि हैं। 'रहस्यवाद आध्यात्मिक आस्था का एक प्रकार है। उसकी भावना का पक्ष ही साधना पक्ष से जोड़ता है। निराला में आध्यात्मिक चिंतन प्रारंभ से ही मिलते हैं और वही उनको काली, दुर्गा, राम, कृष्ण, शिव आदि के लोक

कल्याणकारी रुप में वंदना करने की प्रेरणा देते हैं। आगे चलकर कवि की मानसिकता इस संसय को मिथ्या समझने लगती है और व्यक्ति उस परम सत्ता के सामने अपनी समस्त शक्ति को विर्सति करके मात्र उसी की शरण में चला जाता है। निराला के अंतिम गीत संकलनों में संकलित गीत जीव के सम्पूर्ण विलयन और आत्मोसर्ग भाव से लिखी गई कविताएँ हैं। अपने जीवन की दुःख कातरता और उसके सामने ब्रम्ह रुप की विराटता ही इसका फलक है। प्रकृति के प्रति भी वही विराट संयोजन वही मंगलकारी सम्बोधन उनको दिखाई पड़ते हैं। कहाँ प्रारंभ का वह बादल-राग जिसमें क्रान्ति की ज्वाला थी, गीतगुंज में आकर शांत और शालीन हो गई।'36

"आओ आओ वारिद वंदन
बरसो सुख बरसो आनन्दन।
आशिषवायु गुल्म तृण परसो
जन-जन के प्राणो में सरसो
दृग का अंचल वरसो हे वरसो
स्नेह स्नेह के आंगन स्पन्दन।'37

निराला के गीतों में तुलसी की विनय पत्रिका के समान रहस्यवाद की आभा देखी जा सकती है। ब्रम्ह शक्ति का बोध निराला की कविताओं में झलकता है -

"नव तन कनक किरण फूटी।
दुर्जय भय बाधा छूटी है।
प्रात धवल कलि गात निरामय
मधु-मकरंद-गंध विशदाशय,
सुमन सुमन वन मन अमरणक्षय
सिर पर स्वर्गाशिष टूटी है।
बन के तरु थी कनक वान की

बल्ली फैली तरुण प्राण की
निर्जल तक उलझे वितान की
गत युग की गाथा छूटी है।'38

(क) विवेकानन्द का प्रभाव

निराला जी ने सदा यही समझा कि मनुष्य में सन्यासी ही सबसे बड़ा है। स्वामी विवेकानन्द का आन्दोंलन सन्यासियों का वैराग्य मात्र न था, उसमें राजनीति दासता और सामाजिक रुढ़ियों के लिए चुनौती का स्वर भी था। अपने को दीन और निक्रिष्ट समझने वाले मध्यवर्ग को स्वामी जी ने गर्व से जीने के लिए वेदांत के दर्शन कराये। निराला स्वामी जी से प्रभावित थे और उन्होंने सेवा प्रारम्भ नाम की कविता में स्वामी जी के इन रुपों का वर्णन भी किया है।

'स्वामी विवेकानन्द ने जिस ब्रम्ह का वर्णन किया है वह वास्तव में उपनिषदों में उल्लिखित ब्रम्ह है। जो निर्गुण, निराकार, अज्ञेय, अखणड, अव्यक्त, अनिवर्चनीय है। जो कण-कण में एवं घट-घट में व्याप्त है। जो व्यष्टि भी है और समिष्टि भी। इस तरह यह अनुभूति का विषय है, अभिव्यक्ति का नहीं। यह तो गुँगें का गुड़ है। महाकवि निराला ने भी अपने काव्य में इसी ब्रम्ह को स्थान दिया है इसलिए इन्होंने ब्यष्टि और समिष्टि को समान रुप में महत्व दिया है।"39 इसी अभिन्नता का प्रभाव है कि अन्य छायावादी कवियों की तरह निराला पलायनवादी नहीं बने बल्कि लोक सेवा की ओर उन्मुख होते हैं। विवेकानन्द के प्रभाव से ही निराला को इश्वर की असीम शक्ति शत्ता और दैवी कल्पना प्राप्त हुई है। इसी प्रभाव से प्रभावित कवि 'एक बार बस और नाच तु श्यामा', 'दैवी तुम्हें क्या दूँ', 'तुम और मैं' इत्यादि कविताओं का सृजन करता है। 'पंचवटी प्रसंग में कवि ने दैवी को आदिशक्ति माना है, जिसके संकेत मात्र से ही करोड़ो सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह-नक्षत्र आदि ही नहीं अपितु ब्रम्हा, विष्णु, महेश, इन्द्र इत्यादि उत्पन्न और नष्ट होते हैं। इसी का गुनगाण करके मानव भवसिन्धु को पार करता है।'40 इसी आदिशक्ति की उपासना करते

हुए निराला लिखते हैं -

'ममता की चरण रेणु मेरी परम शक्ति है-
मातः की तृप्ति मेरे लिए अष्ट सिद्धियाँ।'41

कवि आदिशक्ति देवी के गुणों का बखान करता हुआ कहता है -

'शक्ति से जिनकी शक्तिशालियों की शत्ता है,
माता है मेरी वे।'42

निराला जी विवेकानन्द के जगन्माता से प्रभावित हैं। इसी प्रभाव के फलस्वरुप वे आदिशक्ति माता का वर्णन करते हैं। कवि ब्रम्ह को पुरुष मानता है। इनका अद्वैत-ब्रम्ह निर्गुण और सगुण दोनों प्रकार का है। माया निर्गुण ब्रम्ह की दासी है -

'निःस्पृह, निःस्व, निरामय, निर्मम
निराकांक्ष, निर्लेप, निरुदगम,
निर्भय, निराकार, निःसम, शम,
माया आदि पदों की दासी।'43

स्वामी विवेकानन्द ने जीवात्मा में परमात्मा की उपस्थिति स्वीकार की है। निराला जी भी इसी तथ्य को स्वीकार करते हैं। आत्मा परमात्मा का ही एक अंश है किन्तु माया के वशीभूत होकर आत्मा परमात्मा से भिन्न है। माया मनुष्य को असद् वृत्तियों का दास बनाती है इन वृत्तियाँ(काम, क्रोध, मद, लोभ, इर्ष्या, द्वेष इत्यादि) मनुष्य के मोक्ष प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती हैं। कवि जीवात्मा को माया के बंधनों से मुक्त रहने के लिए तथा शक्ति प्रदान करने के लिए भगवान से प्रार्थना करता है -

'मानव का मन शान्त करो हे
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ से,
जीवन को एकांत करो हे।'44

विवेकानन्द के अनुसार दुःख आत्मा का परिष्कार करके उसे द्वादशवर्णी सोने की भँति खरा एवं शुद्ध बना देते हैं। सुखात्मक एवं दुखात्मक परिश्थितियों में इश्वर समान रुप से विद्यमान रहता है।'45 विवेकानन्द के इस विचार का प्रभाव निराला पर पड़ा। उनके अनुसार दुख व्यक्ति को विषय वासनाओं से मुक्त करने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है तथा साथ-ही-साथ उसे परम तत्त्व की ओर उन्मुख करता है। दिल को भी दहला देनेवाले दुखों के बीच भी उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाई देता है -

'जब कड़ी मारे पड़ी दिल हिल गया,
मुक्ति की तब युक्ति से मिल खिल गया।'46

निराला दूसरों के दुखों को देख कर दुखी होते हैं और उनके दुखों को दूर करने का प्रयास करते हैं। दीन दुखीयों की सेवा करना निराला जी अपना परम कर्तव्य समझते थे। इसके लिए भले ही उन्हें अनेक प्रकार की दुख और चिंताओं को क्यों न सहना पड़े -

'चिन्ताएँ - बाधाएँ
आती हैं आए।'47

कवि को विधवा, मजदुर, भिक्षुक और अनाथों का दुख व्यथित करता है। उनके प्रति उपेक्षा का भाव निराला को असहनीय प्रतीत होता है। वे कहते हैं -

'यह दुख वह जिसका नहीं कुछ छोर है,

दैव अत्याचार कैसा घोर और कठोर है।
क्या कभी पोंछे किसी के अश्रुजल,
या करते रहे सबको विकल।'48

इसी प्रकार मजदूरिन के दुख की अनुभूति करते कवि कह उठते हैं-

'देखते देखा तो मुझे एक बार,
उस भवन की ओर देखा छिन्नतार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार
ढ़ुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
मैं तोड़ती पत्थर।'49

विवेकानन्द की तरह निराला की भी सहानुभूति जड़-चेतन सभी के लिए है। इन्होंने पर दुख को अनुभूत करके उसके निदान का प्रयास किया है। कवि दलित वर्ग में चेतना लाना चाहता है -

'पशु नहीं वीर तुम
समय सूर, क्रूर नहीं
तुम हो महान, तुम सदा हो महान्
है नश्वर यह दीन भाव,
कायरता, कामपरता,
ब्रम्ह हो तुम।'50

विवेकानन्द के अनुसार संसार की सृष्टि ब्रम्ह से हुई। सृष्टि की विभिन्न शक्तियाँ उसी ब्रम्ह की अभिव्यक्ति है। निराला इस तथ्य को अपने काव्य में अभिव्यक्त करते हुए यही मानते हैं कि जगत् की उत्पत्ति परम तत्त्व की इच्छा और अभिलाषा का ही प्रमाण है -

'इच्छा हुई सृष्टि की,
प्रथम तरंग वह आनन्द-सिन्धु में,
प्रथम कम्पन में सम्पूर्ण बीज सृष्टि की,
पूर्णता से खुला मैं पूर्ण सृष्टि शक्ति ले।'51

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि निराला के काव्य में स्वामी विवेकानन्द के विचारों का समन्वय मिलता है। वे स्वामी जी से इतने प्रभावित हैं कि उनके विचारों को यथावत् काव्य रुप देने में जरा भी संकोच नहीं करते। 'स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने जहाँ अद्वैतवाद को नए आयाम अपनी भाव-साधना के माध्यम से दिए तो स्वामी विवेकानन्द ने उसे व्यवहारिक रुप प्रदान किया और निराला जी ने उसे अपने काव्य कला के माध्यम से लोक-सृजनात्मक रुप में प्रस्तुत कर दिया। इन्होंने ब्रम्ह को सर्वव्यापक, सर्वशक्तिस्वरुप, एवं सृष्टि पालक और संहारक के रुप में चित्रित किया है। जगत् की उत्पत्ति ब्रम्ह से ही हुई है लेकिन माया से वशीभूत इस संसार को अनेक प्रकार के कष्ट, पीड़एँ, शोषण इत्यादि घेर लेते हैं। दीन-दलित वर्ग अत्याचारों में पिसता रहता है, इससे छुटकारा पाने के लिए आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों शक्तियों की आवश्यकता है। निराला जी मनुष्य को ही ईश्वर मानकर उसकी सेवा करने का उपदेश देते हैं क्योंकि पीड़ित मानव की सेवा ही ईश्वर सेवा है।'52

संदर्भ ग्रथ -

1) निराला के काव्य का राजनीतिक संदर्भ - डॉ. संध्या सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 38

2) निराला रचनावली भाग - 6, संपादक - नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006, पृ. 363

3) वही, पृ. 336

4) निराला के काव्य का राजनीतिक संदर्भ - डॉ. संध्या सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 365

5) निराला रचनावली - भाग - 1, संपादक - नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006, पृ. 253

6) वही, पृ. 142

7) वही, पृ. 142

8) वही, पृ. 69

9) वही, पृ. 152

10) वही, पृ. 153

11) निराला आत्महन्ता आस्था, दूधनाथ सिंह - नीलाभ प्रकाशन, 1972, पृ. 129

12) निराला काव्य में कल्पना सौष्ठव - डॉ. सत्यनारायण अग्निहोत्री, साहित्य निलय कानपुर, 2001, पृ. 142

13) निराला - गीतिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 73

14) निराला - अनामिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 58

15) निराला काव्य का अध्ययन - डॉ. भगीरथ मिश्र, प्र. सं. , पृ. 69

16) निराला - बेला, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998 पृ. 78

17) निराला रचनावली- भाग- 1, संपादक नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, 2006, पृ. 99

18) निराला काव्य का अध्ययन - डॉ. भगीरथ मिश्र, प्र. सं. पृ. 65

19) निराला रचनावली - भाग -1, संपादक नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई

दिल्ली 2006, पृ. 152, 153
20) वही, पृ. 162, 163
21) वही, पृ. 246
22) वही, पृ. 251
23) वही, पृ. 153
24) वही, पृ. 223
25) वही, पृ. 85
26) निराला और उनकी अपरा - प्रो. देशराज सिंह भाटी, प्र. सं. पृ. 33
27) निराला जीवन और साहित्य - श्री तेजनारायण सिंह, प्र. सं. पृ. 217
28) निराला रचनावली - भाग -1, संपादक नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 49
29) वही, पृ. 170
30) वही, पृ. 173
31) वही, पृ. 260
32) वही, पृ. 105, 106
33) निराला काव्य में मानव मूल्य और दर्शन- डॉ. देवेन्द्रनाथ तिवारी, प्र. सं. 276
34) निराला रचनावली - भाग -1, संम्पादक नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 203
35) निराला काव्य में कल्पना सौष्ठव - डॉ. सत्यनारायण अग्निहोत्री, साहित्य निलय कानपुर, 2001, पृ. 141
36) निराला, गीतगुंज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981 पृ. 63
37) निराला, अर्चना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995 पृ. 66
38) स्वामी विवेकानन्द, विविध प्रसंग, द्वितीय संस्करण, पृ. 97,98
39) वही, पृ. 215
40) निराला, परिमल(देवी तुम्हें क्या दूँ) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 214
41) वही, वही

42) निराला, अराधना(तुमसे लाग लगी जो मन की) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 62

43) निराला, अर्चना (मानव मन शांत करो हे) लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 1995, पृ. 64

44) काव्य पुरुष निराला - डॉ. जयनाथ नलिन, 1970, पृ. 198

45) निराला, परिमल (अधिवास)राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979, पृ. 109

46) निराला, परिमल, वृत्ति(अधिवास)राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979, पृ. 66

47) निराला, अपरा(विधवा) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृ. 64

48) निराला, अनामिका(तोड़ती पत्थर) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 64

49) निराला, अपरा(जागो फिर एक बार),राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 17, 18

50) निराला, परिमल(जागरण), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 239

51) निराला काव्य में लोक चेतना - डॉ. राजेन्द्र सिंह, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ. 180